ताई

—विश्वम्भरनाथ शर्मा ''कौशिक''

लेखक—परिचय

उर्दू से हिन्दी में आने वाले लेखकों में विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' अपने समय के उल्लेखनीय कहानीकार हैं। उनकी प्रथम कहानी 'रक्षाबन्धन' सन् 1913 में प्रकाशित हुई थी। वे प्रेमचन्द की परम्परा के कहानीकार हैं तथा समाज—सुधार को उन्होंने अपनी कहानियों का कथ्य बनाया। उनकी कहानियों की शैली अत्यन्त सरल, सरस और रोचक है। उनकी हास्य—व्यंग्यपूर्ण कहानियाँ 'चाँद' में 'दुबेजी की चिट्ठी' के रूप में प्रकाशित हुई थीं। उन्होंने लगभग 300 कहानियाँ लिखीं तथा 'रक्षाबन्धन', 'कल्पमंदिर', 'चित्रकला' उनके प्रमुख कहानी—संग्रह हैं।

कौशिक जी की कहानियों में घरेलू जीवन की समस्याओं और उनके समाधान का सफल प्रयास मिलता है। उनकी भाषा सरल, साफ और ओजस्वी है। उनकी कहानियों के पात्र हमारे जीवन के जीते—जागते लोग हैं। वे स्थितियों का मार्मिक चित्रण करने में बहुत सफल हुए हैं।

पाठ—परिचय

'ताई' कौशिक जी की एक प्रसिद्ध कहानी है तथा इस कहानी की गिनती हिन्दी की श्रेष्ठ कहानियों में होती है। यह कहानी पारिवारिक सम्बन्धों की विसंगतियों को उजागर करती है। मानसिक संकीर्णता से उत्पन्न ईर्ष्या—द्वेष बच्चों के स्नेहमय सूत्रों से किस प्रकार दूर हो जाता है, इस तथ्य को बड़ी कुशलता से इस कहानी में चित्रित किया गया है। रामजीदास की पत्नी रामेश्वरी निःसंतान है, किन्तु रामेश्वरी की निकटता उसके देवर के बच्चों से बढ़ती जाती है। ताई रामेश्वरी के मन की ईर्ष्या को बालक 'मनोहर' का निश्छल प्यार धो देता है और रामेश्वरी का चरित्र एक उदात्त महिला के रूप में पाठक के समक्ष उभरता है।

**** ****

''ताऊजी, हमें लेलगाड़ी (रेलगाड़ी) ला दोगे?''—कहता हुआ एक पाँच वर्षीय बालक बाबू रामजीदास की ओर दौड़ा।

बाबू साहब ने दोनों बाँहे फैलाकर कहा— ''हाँ बेटा, ला देंगे।''

उनके इतना कहते ही बालक उनके निकट आ गया। उन्होंने बालक को गोद में उठा लिया और उसका मुख चूमकर बोले— ''क्या करेगा रेलगाड़ी का ?''

बालक बोला– ''उछमें बैठकर बड़ी दूर जायेंगे। हम भी जायेंगे, चुन्नी को भी ले जायेंगे। बाबूजी को नहीं ले जायेंगे। हमें लेलगाड़ी नहीं ला देते। ताऊजी, तुम ला दोगे तो तुम्हें ले जायेंगे।''

बाबू– ''और किसे ले जायेगा ?''

बालक दम–भर सोचकर बोला– ''बछ, औल किसी को नहीं ले जायेंगे।''

पास ही बाबू रामजीदास की अर्धांगिनी बैठी थीं। बाबू साहब ने उनकी ओर इशारा करके कहा– 'और अपनी ताई को नहीं ले जायेगा ?'

बालक कुछ देर तक अपनी ताई की ओर देखता रहा। ताईजी उस समय कुछ चिढ़ी हुई–सी बैठी थी। बालक को उनके मुख के यह भाव अच्छे नहीं लगे। अतएव वह बोला– ''ताई को नहीं ले जायेंगे।''

ताईजी सुपारी काटती हुई बोली–''अपने ताऊ को ही ले जा। मेरे ऊपर दया रख।''

ताई ने यह बात बड़ी रुखाई के साथ कही। बालक ताई के शुष्क व्यवहार को तुरन्त ताड़ गया। बाबू साहब ने पूछा–''ताई को क्यों नहीं ले जायेगा।''

बालक– ''ताई हमें प्याल नहीं कलती।''

बाबू– ''जो प्यार करे तो ले जायेगा?''

बालक को इसमें सन्देह था। ताई का भाव देखकर उसे यह आशा नहीं थी कि वह प्यार करेगी। इससे बालक मौन रहा।

बाबू साहब ने फिर पूछा– ''क्यों रे, बोलता नहीं ? ताई प्यार करे तो, रेल पर बिठाकर ले जायेगा ?''

बालक ने ताऊ को प्रसन्न करने के लिए केवल सिर हिलाकर स्वीकार कर लिया, परन्तु मुख से कुछ नहीं कहा।

बाबू साहब उसे अपनी अर्धांगिनी के पास ले जाकर उनसे बोले–''लो, इसे प्यार कर लो, यह तुम्हें भी ले जायेगा।'' परन्तु बच्चे की ताई श्रीमती रामेश्वरी को पति की यह चुहुलबाजी अच्छी न लगी। वह तुनककर बोली– ''तुम्हीं रेल पर बैठकर जाओ, मुझे नहीं जाना है।''

बाबू साहब ने रामेश्वरी की बात पर ध्यान नहीं दिया। बच्चे को उनकी गोद में बिठाने की चेष्टा करते हुए बोले– ''प्यार नहीं करोगी तो रेल में नहीं बैठायेगा– क्यों रे मनोहर?''

मनोहर ने ताऊ की बात का उत्तर नहीं दिया। उधर ताई ने मनोहर को धकेल दिया। मनोहर नीचे गिर पड़ा। शरीर में चोट नहीं लगी, मन में लगी। बालक रो पड़ा।

बाबू साहब ने बालक को गोद में उठा लिया, चुमकार–पुचकारकर चुप किया और उसे कुछ पैसे तथा रेलगाड़ी देने का वचन देकर छोड़ दिया। बालक मनोहर भावपूर्ण दृष्टि से अपनी ताई की ओर ताकता हुआ उस स्थान से चला गया।

मनोहर के चले जाने पर बाबू रामजीदास रामेश्वरी से बोले– ''तुम्हारा यह कैसा व्यवहार है? बच्चे को ढकेल दिया, जो उसके चोट लग जाती तो?''

रामेश्वरी मुँह लटकाकर बोली–'' लग जाती तो अच्छा होता। क्यों मेरी खोपड़ी पर लादे देते थे? आप ही तो उसे मेरे ऊपर डालते थे और अब आप ही ऐसी बातें करते हैं।''

बाबू साहब कुढ़कर बोले– ''इसी को खोपड़ी पर लादना कहते हैं?''

रामेश्वरी–'' और नहीं किसे कहते हैं ? तुम्हें तो अपने आगे और किसी का दुःख–सुख सूझता ही नहीं। न जाने कब किसका जी कैसा होता है, तुम्हें इन बातों की कुछ परवाह ही नहीं। अपनी चुहुल

से काम है।''

बाबू–''बच्चों की प्यारी–प्यारी बातें सुनकर तो चाहे जैसा जी हो, प्रसन्न हो जाता है। मगर तुम्हारा हृदय न जाने किस धातु का बना हुआ है।;

रामेश्वरी– ''तुम्हारा हो जाता होगा। और होने को होता भी है, मगर वैसा बच्चा भी तो हो। पराये धन से भी कहीं घर भरता है।''

बाबू साहब कुछ देर चुप रहकर बोले–''यदि अपना सगा भतीजा भी पराया धन कहा जा सकता है तो फिर मैं नहीं समझता कि अपना धन किसे कहेंगे?''

रामेश्वरी कुछ उत्तेजित होकर बोलीं– ''बातें बनाना बहुत आता है। तुम्हारा भतीजा है, तुम चाहे जो समझो, पर मुझे ये बातें अच्छी नहीं लगतीं। हमारे भाग फूटे हैं नहीं तो ये दिन काहे को देखने पड़ते। तुम्हारा चलन तो दुनिया से निराला है। आदमी सन्तान के लिए जाने क्या–क्या करते हैं– पूजा–पाठ कराते हैं, व्रत रखते हैं, पर तुम्हें इन बातों से क्या काम ? रात–दिन भाई–भतीजों में मगन रहते हो।''

बाबू साहब के मुख पर घृणा का भाव झलक आया। उन्होंने कहा– ''पूजा–पाठ सब ढकोसला है। जो वस्तु भाग्य में नहीं, वह पूजा–पाठ से कभी प्राप्त नहीं हो सकती। मेरा यह अटल विश्वास है।''

श्रीमतीजी कुछ रुआँसे स्वर में बोलीं– ''इसी विश्वास ने तो सब चौपट कर रखा है। ऐसे ही विश्वास पर सब बैठ जायें तो काम कैसे चले ? सब विश्वास पर ही बैठे रहें, तो आदमी काहे को किसी बात के लिए चेष्टा करे।''

बाबू साहब ने सोचा कि मूर्ख स्त्री के मुँह लगना ठीक नहीं। अतएव वह स्त्री की बात का कुछ उत्तर न देकर वहाँ से टल गये।

(2)

बाबू रामजीदास धनी आदमी हैं। कपड़े की आढ़त का काम करते हैं। लेन–देन भी है। इनके एक छोटा भाई है। उसका नाम है, कृष्णदास। दोनों भाइयों का परिवार एक ही में है। बाबू रामजीदास की आयु 35 वर्ष के लगभग है और छोटे भाई कृष्णदास की 21 वर्ष के लगभग। रामजीदास निःसन्तान हैं। कृष्णदास के दो सन्तानें है। एक पुत्र, वही पुत्र जिससे पाठक परिचित हो चुके हैं– और एक कन्या है। कन्या की आयु 2 वर्ष के लगभग है।

रामजीदास अपने छोटे भाई और उनकी सन्तान पर बड़ा स्नेह रखते हैं– ऐसा स्नेह कि उनके प्रभाव से उन्हें अपनी सन्तानहीनता कभी खटकती ही नहीं। छोटे भाई की सन्तान को वे अपनी ही सन्तान समझते हैं। दोनों बच्चे भी रामजीदास से इतने हिले हैं कि उन्हें अपने पिता से भी अधिक समझते हैं।

परन्तु रामजीदास की पत्नी रामेश्वरी को अपनी सन्तानहीनता का बड़ा दुःख है। वह रात–दिन सन्तान ही के सोच में घुला करती हैं। छोटे भाई की सन्तान पर पति का प्रेम उनकी आँखों में काँटे की तरह खटकता है।

रात को भोजन इत्यादि से निवृत्त होकर रामजीदास शैया पर लेटे हुए शीतल और मन्द वायु का आनन्द ले रहे थे। पास ही दूसरी शैया पर रामेश्वरी हथेली पर सिर रखे, किसी चिन्ता में डूबी हुई थी। दोनों बच्चे अभी बाबू साहब के पास से उठकर अपनी माँ के पास गये थे।

बाबू साहब ने अपनी स्त्री की ओर करवट लेकर कहा–''आज तुमने मनोहर को इस बुरी तरह से ढकेला था कि मुझे अब तक उसका दुःख है, कभी–कभी तो तुम्हारा व्यवहार बिल्कुल ही अमानुषिक हो उठता है।''

रामेश्वरी बोली– ''तुम्हीं ने ऐसा बना रखा है। उस दिन उस पण्डित ने कहा था कि हम दोनों

के जन्म–पत्र में सन्तान का योग है और उपाय करने पर सन्तान हो भी सकती है; उसने उपाय भी बताये थे, पर तुमने उनमें से एक भी उपाय करके न देखा। बस, तुम तो इन्हीं दोनों में मगन हो। तुम्हारी इस बात से रात–दिन मेरा कलेजा सुलगता रहता है। आदमी उपाय तो करके देखता है। फिर होना न होना तो भगवान के अधीन है।''

बाबू साहब हँसकर बोले– ''तुम्हारी जैसी सीधी स्त्री भी ..... क्या कहूँ, तुम इन ज्योतिषियों की बातों पर विश्वास करती हो, जो दुनिया–भर के झूठे और धूर्त हैं। ये झूठ बोलने ही की रोटियाँ खाते हैं।''

रामेश्वरी तुनककर बोली– ''तुम्हें तो सारा संसार झूठा ही दिखाई पड़ता है। ये पोथी–पुराण भी सब झूठे हैं। पण्डित कुछ अपनी तरफ से तो बनाकर कहते नहीं हैं, शास्त्र में जो लिखा है, वही वे भी कहते हैं। शास्त्र झूठा है तो वे भी झूठे हैं। अँग्रेजी क्या पढ़ी, अपने आगे किसी को गिनते ही नहीं। जो बातें बाप–दादों के जमाने से चली आई हैं उन्हें भी झूठा बताते हैं।''

बाबू साहब–''तुम समझती तो हो नहीं, अपनी ही ओटे जाती हो। मैं यह नहीं कहता कि ज्योतिषी–शास्त्र झूठा है। सम्भव है वह सच्चा हो। परन्तु ज्योतिषियों में अधिकांश झूठे होते हैं। उन्हें ज्योतिष का पूर्ण ज्ञान तो होता नहीं, दो–एक छोटी–मोटी पुस्तकें पढ़कर ज्योतिष बन बैठते हैं और लोगों को ठगते–फिरते हैं। ऐसी दशा में उन पर कैसे विश्वास किया जा सकता है?''

रामेश्वरी– ''हूँ, सब झूठे ही हैं। तुम्ही एक सच्चे हो। अच्छा एक बात पूछती हूँ, भला तुम्हारे जी में सन्तान की इच्छा क्या कभी नहीं होती?''

इस बार रामेश्वरी ने बाबू साहब के हृदय का कोमल स्थान पकड़ा। वह कुछ देर चुप रहे। तत्पश्चात् एक लम्बी साँस लेकर बोले– 'भला ऐसा कौन मनुष्य होगा, जिसके हृदय में सन्तान का मुख देखने की इच्छा न हो? परन्तु किया क्या जाय ? जब नहीं है और न होने की आशा है, तब उसके लिए व्यर्थ चिन्ता करने से क्या लाभ ? इसके सिवा, जो बात अपनी सन्तान से होती है, वही भाई की सन्तान से हो रही है। जितना स्नेह अपनी पर होता उतना ही इन पर भी है। जो आनन्द उनकी बाल–क्रीड़ा से आता, वही इनकी क्रीड़ा से भी आ रहा है। फिर मैं नहीं समझता कि चिन्ता क्यों की जाय ?

रामेश्वरी कुछ कुढ़कर बोली– '' तुम्हारी समझ को क्या कहूँ। इसी से तो रात–दिन जला करती हूँ। भला यह तो बताओ कि हमारे पीछे क्या इन्हीं से तुम्हारा नाम चलेगा ?''

बाबू साहब हँसकर बोले– ''अरे तुम भी कहाँ की पोच बातें लाईं। नाम सन्तान से नहीं चलता। नाम अपनी सुकृति से चलता है। तुलसीदास को देश का बच्चा–बच्चा जानता है। सूरदास को मरे कितने दिन हो चुके। इसी प्रकार कितने महात्मा हो गये हैं, उन सबका नाम क्या उनकी सन्तान ही की बदौलत चल रहा है? सच पूछो, तो सन्तान से जितनी नाम चलने की आशा रहती है उतनी नाम डूब जाने की सम्भावना रहती है। परन्तु सुकृति एक ऐसी वस्तु है, जिसके नाम बढ़ने के सिवा घटने की आशंका रहती ही नहीं। हमारे शहर में राय गिरधारी लाल कितने नामी आदमी थे। उनके सन्तान कहाँ है ? पर उनकी धर्मशाला और अनाथालय से उनका नाम अब तक चला आ रहा है, और अभी न जाने कितने दिनों तक चलता जायेगा।''

रामेश्वरी– ''शास्त्र में लिखा है, जिसके पुत्र नहीं होता, उसकी मुक्ति नहीं होती।''

बाबू– ''मुक्ति पर मुझे विश्वास ही नहीं। मुक्ति है किस चिड़िया का नाम ? यदि मुक्ति होना मान लिया जाय, तो यह कैसे माना जा सकता है कि सब पुत्रवानों की मुक्ति हो जाती है ? मुक्ति का भी क्या सहज उपाय है! ये जितने पुत्र वाले हैं, सभी की तो मुक्ति हो जाती होगी ?''

रामेश्वरी निरुत्तर होकर बोली– ''अब तुमसे कौन अपवाद करे। तुम तो अपने सामने किसी को

मानते ही नहीं।''

(3)

मनुष्य का हृदय बड़ा ममत्व–प्रेमी है। कैसी ही उपयोगी और कितनी ही सुन्दर वस्तु क्यों न हो, जब तक मनुष्य उसको पराई समझता है, तब तक उससे प्रेम नहीं करता। किन्तु भद्दी–से–भद्दी और काम न आने वाली वस्तु को भी यदि मनुष्य अपनी समझता है, तो उससे प्रेम करता है। पराई वस्तु कितनी ही मूल्यवान क्यों न हो, कितनी ही उपयोगी क्यों न हो, कितनी ही सुन्दर क्यों न हो, उसके नष्ट होने पर मनुष्य कुछ भी दु :ख का अनुभव नहीं करता, इसलिए कि वह वस्तु उसकी नहीं पराई है। अपनी वस्तु कितनी ही भद्दी हो, काम में न आने वाली हो, उसके नष्ट होने पर मनुष्य को दुःख होता है, इसलिए कि वह अपनी चीज है। कभी–कभी ऐसा भी होता है कि मनुष्य पराई चीज से प्रेम करने लगता है। ऐसी दशा में जब तक मनुष्य उस वस्तु को अपनी बनाकर नहीं छोड़ता अथवा अपने हृदय में भी जब तक यह विचार दृढ़ नहीं कर लेता कि वह वस्तु मेरी है, तब तक उसे सन्तोष नहीं होता। ममत्व से प्रेम उत्पन्न होता है, प्रेम से ममत्व। इन दोनों का साथ चोली–दामन का–सा है। ये कभी पृथक् नहीं किये जा सकते।

यद्यपि रामेश्वरी को माता बनने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ था तथापि उनका हृदय एक माता का हृदय बनने की पूरी योग्यता रखता था। उनके हृदय में वे गुण विद्यमान तथा अन्तर्निहित थे, जो एक माता के हृदय में होते हैं, परन्तु उनका विकास नहीं हुआ था। उनका हृदय उस भूमि की तरह था, जिसमें बीज तो पड़ा था, पर उसको सींचकर और इस प्रकार बीज को प्रस्फुटित करके भूमि के ऊपर लाने वाला कोई नहीं। इसलिए उनका हृदय उन बच्चों की ओर खिंचता तो था, परन्तु जब उन्हें ध्यान आता था कि ये मेरे बच्चे नहीं, दूसरे के हैं, तब उनके हृदय में उनके प्रति द्वेष उत्पन्न होता था, घृणा पैदा होती थी। विशेषकर उस समय उनके द्वेष की मात्रा और भी बढ़ जाती थी जब वे देखती थीं कि उनके पतिदेव उन बच्चों पर प्राण देते हैं, जो उनके (रामेश्वरी के) नहीं हैं।

शाम का समय था। रामेश्वरी खुली छत पर बैठी हवा खा रही थी। पास ही उनकी देवरानी भी बैठी थी। दोनों बच्चे छत पर दौड़कर खेल रहे थे। रामेश्वरी उनके खेलों को देख रही थी। इस समय रामेश्वरी को बच्चों का खेलना–कूदना बड़ा भला मालूम हो रहा था। हवा में उड़ते हुए उनके बाल, कमल की तरह खिले हुए उनके नन्हे–नन्हें मुख, उनकी प्यारी–प्यारी तोतली बातें, उनका चिल्लाना, भागना, लौट जाना इत्यादि क्रीड़ाएँ उनके हृदय को शीतल कर रही थीं। सहसा मनोहर अपनी बहन को मारने दौड़ा। वह खिलखिलाती हुई दौड़कर रामेश्वरी की गोद में जा गिरी। उसके पीछे–पीछे मनोहर भी दौड़ा हुआ आया, और वह भी उन्हीं की गोद में जा गिरा। रामेश्वरी उस समय सारा द्वेष भूल गई। उन्होंने दोनों बच्चों को उसी प्रकार हृदय से लगा लिया, जिस प्रकार वह मनुष्य लगाता है, जो कि बच्चों के लिए तरस रहा हो। उन्होंने बड़ी सतृष्णता से दोनों को प्यार किया। उस समय यदि कोई अपरिचित उन्हें देखता, तो उसे यही विश्वास होता कि रामेश्वरी उन बच्चों की माता है।

दोनों बच्चे बड़ी देर तक उनकी गोद में खेलते रहे। सहसा उसी समय किसी के आने की आहट पाकर बच्चों की माता वहाँ से उठकर चली गई।

''मनोहर, ले रेलगाड़ी।'' कहते हुए बाबू रामजीदास छत पर आये उनका स्वर सुनते ही दोनों बच्चे रामेश्वरी की गोद से तड़पकर निकल भागे। रामजीदास ने पहले उन दोनों को खूब प्यार किया फिर बैठकर रेलगाड़ी दिखाने लगे।

इधर रामेश्वरी की नींद टूटी। पति को बच्चों में मगन होते देखकर उनकी भवें तन गईं। बच्चों के प्रति फिर वही घृणा और द्वेष का भाव जाग उठा।

बच्चों को रेलगाड़ी देकर बाबू साहब रामेश्वरी के पास आये, और मुस्कराकर बोले– ''आज तो तुम बच्चों को बड़ा प्यार कर रही थीं। इससे मालूम होता है कि तुम्हारे हृदय में भी इनके प्रति कुछ प्रेम अवश्य है।''

रामेश्वरी को पति की यह बात बुरी लगी। उन्हें अपनी कमजोरी पर बड़ा दुःख हुआ। केवल दुःख ही नहीं अपने ऊपर क्रोध भी आया। वह दुःख और क्रोध पति के उक्त वाक्य से और भी बढ़ गया। उनकी कमजोरी पति पर प्रकट हो गई, यह बात उनके लिए असह्य हो उठी।

रामजीदास बोले– ''इसलिए मैं कहता हूँ कि अपनी सन्तान के लिए सोच करना वृथा है। यदि तुम इनसे प्रेम करने लगो, तो तुम्हें ये ही अपनी सन्तान प्रतीत होने लगेंगे। मुझे इस बात से प्रसन्नता है कि तुम इनसे स्नेह करना सीख रही हो।''

यह बात बाबू साहब ने नितान्त शुद्ध हृदय से कही थी, परन्तु रामेश्वरी को इसमें व्यंग्य की तीक्ष्ण गन्ध मालूम हुई। उन्होंने कुढ़कर मन में कहा– ''इन्हें मौत भी नहीं आती। मर जायें, पाप कटे। आठों प्रहर आँखों के सामने रहने से प्यार करने को जी ललचा उठता है। इनके मारे कलेजा और भी जला करता है।''

बाबू साहब ने पत्नी को मौन देखकर कहा– ''अब झेंपने से क्या लाभ? अपने प्रेम को छिपाना व्यर्थ है। छिपाने की आवश्यकता भी नहीं।''

रामेश्वरी जलकर बोलीं– ''मुझे क्या पड़ी, जो मैं प्रेम करूँगी? तुम्हीं को मुबारक हो। निगोड़े आप ही आ–आकर घुसते हैं। एक घर में रहने से कभी–कभी हँसना–बोलना भी पड़ता है। अभी परसों जरा यूँ ही धकेल दिया, उस पर तुमने सैकड़ों बातें सुनाईं। संकट में प्राण हैं, न यों चैन, न वों चैन।''

बाबू साहब को पत्नी के ये वाक्य सुनकर बड़ा क्रोध आया। उन्होंने कर्कश स्वर में कहा– ''न जाने कैसे हृदय की स्त्री है। अभी अच्छी–खासी बैठी बच्चों को प्यार कर रही थी। मेरे आते ही गिरगिट की तरह रंग बदलने लगी। अपनी इच्छा से चाहे जो करे, पर कहने से बल्लियों उछलती है। न जाने, मेरी बातों में कौन–सा विष घुला है। यदि मेरा कहना ही बुरा मालूम होता है, तो न कहा करूँगा। इतना याद रखो कि अब जो कभी इनके विषय में निगोड़े–सिगोड़े कहा तो अच्छा न होगा। तुमसे मुझे बच्चे कहीं अधिक प्यारे हैं।''

रामेश्वरी ने इसका कोई उत्तर न दिया। अपने क्षोभ तथा क्रोध को वह आँखों द्वारा निकालने लगीं।

जैसे–ही–जैसे बाबू रामजीदास का स्नेह दोनों बच्चों पर बढ़ता जाता था। वैसे–ही–वैसे रामेश्वरी के द्वेष और घृणा की मात्रा भी बढ़ती जाती थी। प्रायः बच्चों के पीछे पति–पत्नी में कहा–सुनी हो जाती थी, और रामेश्वरी को पति के कटु वचन सुनने पड़ते थे। जब रामेश्वरी ने यह देखा कि बच्चों के कारण वह पति की नजरों में गिरती जा रही हैं, तब उनके हृदय में बड़ा तूफान उठा। उन्होंने सोचा– पराये बच्चों के पीछे यह मुझसे प्रेम कम करते जाते हैं, मुझे हर समय बुरा–भला कहा करते हैं। इनके लिए बच्चे ही सब कुछ हैं, मैं कुछ भी नहीं। दुनिया मरती जाती है, पर इन दोनों को मौत नहीं। ये पैदा होते ही क्यों न मर गये? न होते, न मुझे ये दिन देखने पड़ते। जिस दिन ये मरेंगे, उस दिन घी के चिराग जलाऊँगी। इन्होंने ही मेरा घर सत्यानाश कर रखा है।

इसी प्रकार कुछ दिन व्यतीत हुए। एक दिन नियमानुसार रामेश्वरी छत पर अकेली बैठी हुई थी। उनके हृदय में अनेक विचार आ रहे थे। विचार और कुछ नहीं, वही अपनी निज की सन्तान का अभाव, पति का भाई की सन्तान के प्रति अनुराग इत्यादि। कुछ देर बाद उनके विचार स्वयं कष्टदायक प्रतीत

होने लगे। तब वह अपना ध्यान दूसरी ओर लगाने के लिए उठकर टहलने लगी।

वह टहल रही थी कि मनोहर दौड़ता हुआ आया। मनोहर को देखकर उनकी भृकुटी चढ़ गई और वह छत की चारदीवारी पर हाथ रखकर खड़ी हो गईं।

सन्ध्या का समय था। आकाश में रंग–बिरंगी पतंगें उड़ रही थीं। मनोहर कुछ देर तक खड़ा पतंगों को देखता और सोचता रहा कि कोई पतंग कटकर उसकी छत पर गिरे, तो क्या आनन्द आये। देर तक पतंग गिरने की आशा करने के बाद वह दौड़कर रामेश्वरी के पास आया और उसकी टाँगों से लिपटकर बोला–''ताई, हमें पतंग मँगा दो।'' रामेश्वरी ने झिड़ककर कहा–''चल हट, अपने ताऊ से माँग जाकर।''

मनोहर अप्रतिभ होकर फिर आकाश की ओर ताकने लगा। थोड़ी देर बाद उससे फिर न रहा गया। इस बार उसने बड़े लाड़ में आकर अत्यन्त करुण स्वर में कहा– ''ताई पतंग मँगा दो; हम भी उडायेंगे।''

इस बार उसकी भोली प्रार्थना से रामेश्वरी का कलेजा कुछ पसीज गया। वह कुछ देर तक उसकी ओर स्थिर दृष्टि से देखती रहीं। फिर उन्होंने एक लम्बी साँस लेकर मन–ही–मन कहा, 'यदि यह मेरा पुत्र होता तो आज मुझसे बढ़कर भाग्यवान स्त्री संसार में दूसरी न होती। निगोड़ा–मरा कितना सुन्दर है, और कैसी प्यारी–प्यारी बातें करता है। यही जी चाहता है कि उठाकर छाती से लगा लूँ।

यह सोचकर वह उसके सिर पर हाथ फेरने वाली ही थीं कि मनोहर उन्हें मौन देखकर बोला– ''तुम हमें पतंग नहीं मँगवा दोगी, तो ताऊजी से कहकर तुम्हें पिटवायेंगे।''

यद्यपि बच्चे की इस भोली बात में भी बड़ी मधुरता थी, तथापि रामेश्वरी का मुख क्रोध से लाल हो गया। वह उसे झिड़ककर बोलीं–''जा कह दे अपने ताऊ से। देखूँ, वह मेरा क्या कर लेंगे?''

मनोहर भयभीत होकर उनके पास से हट आया और सतृष्ण नेत्रों से आकाश में उड़ती हुई पतंगों को देखने लगा।

इधर रामेश्वरी ने सोचा–''यह सब ताऊ का दुलार है कि बालिश्त–भर का लड़का मुझे धमकता है। ईश्वर करे, इस दुलार पर बिजली टूटे।''

उसी समय आकाश से एक पतंग कटकर उसी छत की ओर आई, और रामेश्वरी के ऊपर से होकर छज्जे की ओर गई। छत के चारों ओर चारदीवारी थी। जहाँ रामेश्वरी खड़ी हुई थीं, केवल वहाँ एक द्वार था, जिससे छज्जे पर आ–जा सकते थे। रामेश्वरी इस द्वार से सटकर खड़ी थीं। मनोहर ने पतंग को छज्जे पर जाते देखा। पतंग पकड़ने के लिए वह दौड़कर छज्जे की ओर चला गया और उनसे (रामेश्वरी से) दो फीट की दूरी पर खड़ा होकर पतंग को देखने लगा। रामेश्वरी खड़ी देखती रहीं। पतंग छज्जे पर से होती हुई नीचे, घर के आँगन में जा गिरी। एक पैर छज्जे की मुँडेर पर रखकर मनोहर ने नीचे आँगन में झाँका और पतंग को आँगन में गिरते देखकर प्रसन्नता के मारे फूला न समाया। वह नीचे जाने के लिए शीघ्रता से घूमा; परन्तु घूमते समय मुँडेर से उसका पैर फिसल गया। वह नीचे की ओर चला। नीचे जाते–जाते उसके दोनों हाथों में मुँडेर आ गई। वह उसे पकड़कर लटक गया और रामेश्वरी की ओर देखकर चिल्लाया– ''ताई!'' रामेश्वरी ने धड़कते हृदय से घटना को देखा। उनके मन में आया कि अच्छा है, मरने दो, सदा का पाप कट जायेगा। यही सोचकर वह एक क्षण के लिए रुकीं, उधर मनोहर के हाथ मुँडेर पर से फिसलने लगे। वह अत्यन्त भय और करुण नेत्रों से रामेश्वरी की ओर देखकर चिल्लाया– ''अरी ताई!'' मनोहर की आँखें रामेश्वरी की आँखों से मिलीं। मनोहर की वह करुण दृष्टि देखकर रामेश्वरी का कलेजा मुँह को आ गया। उन्होंने व्याकुल होकर मनोहर को पकड़ने के लिए अपना

हाथ बढ़ाया। उनका हाथ मनोहर के हाथ तक पहुँचा भी नहीं था कि मनोहर के हाथ से मुँडेर छूट गई। वह नीचे जा गिरा। रामेश्वरी चीख मारकर छज्जे पर गिर पड़ीं।

रामेश्वरी एक सप्ताह तक बुखार में पड़ी रही। कभी–कभी वह जोरों से चिल्ला उठतीं और कहतीं– ''देखो–देखो, वह गिरा जा रहा है– उसे बचाओ– दौड़ो– मेरे मनोहर को बचा लो।'' कभी वह कहतीं– ''बेटा मनोहर, मैंने तुझे नहीं बचाया। हाँ–हाँ, मैं चाहती तो बचा सकती थी– मैंने देर कर दी।'' मनोहर की टाँग उखड़ गई थी। टाँग बिठा दी गई। वह क्रमशः फिर अपनी हालत पर आने लगा।

एक सप्ताह बाद रामेश्वरी का ज्वर कम हुआ। अच्छी तरह हो आने पर उन्होंने पूछा– ''मनोहर कैसा है?''

रामजीदास ने उत्तर दिया– ''अच्छा है।''

रामेश्वरी– ''उसे मेरे पास लाओ।''

मनोहर रामेश्वरी के पास लाया गया। रामेश्वरी ने उसे प्यार से हृदय से लगाया। आँखों से आँसुओं की झड़ी लग गई। हिचकियों से गला रुँध गया।

रामेश्वरी कुछ दिनों के बाद पूर्ण स्वस्थ हो गई। अब वह मनोहर की बहन चुन्नी से भी द्वेष और घृणा नहीं करतीं और मनोहर तो अब उनका प्राणाधार हो गया। उसके बिना उन्हें एक क्षण भी चैन नहीं पड़ती।

शब्दार्थ–

चुहुल– मजाक,	आढ़त– थोक व्यापार,	अमानुषिक– अमानवीय,
ओटे जाना– कहे जाना,	पोच–कमजोर,	सुकृति– सद्कार्य,
ममत्व–ममता,	अन्तर्निहित– छिपा हुआ,	चेष्टा–इच्छा,
उत्तेजित–क्रोधित,	विद्यमान– मौजूद,	प्रस्फुटित– निकलना,
द्वेष– दुर्भावना	तृष्णा– लालसा,	तीक्ष्ण– तेज,
कुढ़कर– चिढ़कर,	वृथा– व्यर्थ,	कर्कश– कठोर वाणी,
अप्रतिम– अद्वितीय, अनुपम।		

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. पति को बच्चों में मगन होते देखकर उनकी भवें तन गईं। किसकी भवें तन गईं–
   (क) बाबू साहब (ख) मनोहर की माँ
   (ग) रामेश्वरी की (घ) इनमे से कोई नहीं ( )
2. रामेश्वरी के मन में एक अभाव हमेशा खटकता था। वह क्या था–
   (क) धन का (ख) संतान का
   (ग) घर का (घ) पति का ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. ताऊजी हमें लेलगाड़ी (रेलगाड़ी) ला दोगे। यह किसने और किससे कहा ?
2. एक बार रामेश्वरी ने बाबू साहब के हृदय का कोमल स्थान पकड़ा। बाबू साहब के हृदय का कोमल भाव क्या था ?

3. कहानी में बाबू साहब का पूरा नाम क्या है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. ताई कहानी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।
2. किस घटना से रामेश्वरी का ह्रदय परिवर्तन हुआ ? स्पष्ट कीजिए।
3. बाबू साहब के मुख पर घृणा का भाव झलक आया। ऐसा क्यों हुआ और उन्होंने क्या जबाब दिया ?
4. कभी–कभी तो तुम्हारा व्यवहार बिल्कुल ही अमानुषिक हो उठता है। यह पंक्ति किसने कही और क्यों कही ?
5. ताई कहानी से आपको क्या प्रेरणा मिलती है ?

निबंधात्मक प्रश्न–

1. ताई कहानी की कथा वस्तु का सार लिखकर उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
2. कहानी के आधार पर रामेश्वरी का चरित्र–चित्रण कीजिए।
3. कहानी की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।
4. 'ताई कहानी के आधार पर बाबू रामजीदास की चरित्रगत विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

*****